मित्रता

डॉ. ललिता कुमारी
हिंदी प्राध्यापिका
आर के डी एफ विश्वविद्यालय रांची, पिन कोड–834001

मित्रता और पवित्रता में नहीं है फर्क,
मित्र हो सच्चा तो जीवन है स्वर्ग,
मित्र ही हीरा, मित्र ही मोती मित्र से जगमग जीवन रूपी ज्योति,
मित्र ही दुआ, अरदास ,मन्नत इसके होने से जहाँ लगती जन्नत,
जीवन रूपी धार में या हो मझधार में,
किसी विपत्ति में या हो उन्नति में,
जब साथ हो तेरा, घनघोर अंधेरा भी लगे मानो सजल सवेरा,
मित्र मानों इत्र जिसकी खुशबू फैली सर्वत्र,
भाव में अभाव में या हो प्रभाव में तनिक भी परिवर्तन नहीं स्वभाव में,
सूर्य की पहली किरण बारिश की बौछार,
चाँदनी की शीतलता तारों की झिलमिलाहट,
जुगनू की चमक भँवरे की गुँजन,
इन सब की तरह ताजगी और नवीनता लिए हो हम सब की मित्रता ।